InternatIonal Journal of HIndi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-10-2020; Accepted: 11-11-2020; Published: 28-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 98-99

राजेंद्र यादव के कथा साहित्य में नारी दर्शन

अंजना सिंह
शोधार्थी, हिंदी A.P.S. यूनिवर्सिटी रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

शोध सारांश
राजेंद्र यादव के कथा साहित्य में नारी के प्रति दृष्टि, नारी के दृष्टिकोण व उसकी मनोवैज्ञानिक दशा का वर्णन है, राजेंद्र यादव संघर्षों से जूझने वाले लेखक हैं, संघर्षों से पलायन उनकी प्रवृत्ति नहीं है, विरोधी परिस्थियों का डट कर सामना करने में वे विश्वास करते हैं यही संघर्ष उनकी रचनाओं में नारी के हर रूपों में देखने को मिलता है I प्रत्येक रचनाकार के लेखन की कुछ सीमाएं होती हैं जो उसकी विचारधारा, अभिरूचि और सौंदर्यबोध एवं संवेदनशीलता का पर्याय होती हैं I राजेंद्र यादव के कथा साहित्य में अभिव्यक्ति एवं प्रगतिशीलता दोनों ही देखी जा सकती है I राजेंद्र यादव के कथा साहित्य में स्त्री पात्र वस्तुतः पुरुष पात्रों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील और विद्रोही हैं, जो परिवेशगत सीमाओं का अतिक्रमण करना चाहती हैं I राजेंद्र यादव के उपन्यास तथा कहानियां इस बात का साक्ष्य हैं की व्यक्ति और समाज के किसी भी तरह पुरानी तथा रूढ़ियों के आधार पर किसी भी तरह का बदलाव उन्हें स्वीकार नहीं है, वह सामाजिक जीवन- सन्दर्भों में सामाजिक जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं से भी रूबरू होते हैं, व्यक्ति मन की कुंठाओं- विसंगतियों और आकांछाओं से भी उनके चरित्रों की अपनी एक दुनिया है I व्यक्ति के जीवन की विसंगतियों के स्रोत वे, सामाजिक जीवन - सन्दर्भों में खोजते हैं, इस नाते उनका "व्यक्ति विशेष" किसी ना किसी वृहद् स्तर पर सामाजिक सन्दर्भों से जुड़ा रहता है I

मूल शब्द: राजेंद्र यादव, मध्यमवर्गीय समाज, नारी शिक्षा, नारी विकास

व्याख्या
राजेंद्र यादव का नाम स्वतंत्रयोत्तर युग के उपन्यासकारों में विशेष रूप से उल्लेखनीय है I समकालीन जीवन की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण इनकी कथाकृतियों की प्रमुख विशेषता है I वैयक्तिक कुंठाओं तथा मानसिक विकृतियों की प्रतिक्रियात्मक संवेदनाएं इनकी रचनाओं में प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्ति हुयी है I राजेंद्र यादव एक ऐसे विचारधारा के लेखक थे जो स्त्री विमर्श पर अपना ध्यान केंद्रित कर उसको हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है I हमारे देश में जैसे दलित विमर्श, आदिवासी, विमर्श जो हिन्दुस्तान में ही चला उस तरह स्त्री विमर्श नहीं बन पाया स्त्री विमर्श को सबसे पहले राजेंद्र यादव ने समझा और उसको अपनी पुस्तकों के माध्यम से हमारे सामने रखा. उनकी पुस्तकों के माध्यम से हमने जाना की स्त्रियों ने जो कुछ भी हासिल किया है वह लड़ कर ही किया है क्योंकि समाज लड़ाई से बदलता है, आंदोलन से बदलता है I समाज में पुरुष का स्त्री के शिक्षा, स्वतंत्रता, एवं केवल उपभोग की वस्तु मानना जैसे स्तर पर उसके नजरिये का गंभीरता से पहली बार किसी लेखक ने जो एक पुरुष होकर भी स्त्रियों की मनोदशा का वर्णन इतनी सहजता और सच्चायी के साथ करता है I राजेंद्र यादव के ही कथा साहित्य में स्त्रियों का मनोविश्लेषण अध्ययन व नारी दर्शन के तौर पर उनकी मानसिक स्थिति को व्यापकता के साथ हमारे सामने रखा है I नारी सम्बन्धी प्रगतिशील विचारधारा राजेंद्र यादव के अधिकांश उपन्यासों में देखी जा सकती है I वे नारी को एक स्वतंत्र सामाजिक इकाई के रूप में देखते हैं I कई बार यह देखने को मिलता है कि पुरुष के व्यक्तित्व के सामने नारी को झुकना ही पड़ता है किन्तु राजेंद्र यादव के उपन्यासों में नारी भी अपन पृथक आस्तित्व भी बनाये हुए है और अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण सचेत है I यों तो पुरुष सत्ता प्रधान समाज में नारी को सदैव से गौण स्थान दिया जाता रहा है I जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्रों में पुरुष के सामान अधिकारों की मांग करने वाली नारी व्यवहारिक स्तर पर आज भी शोषित ही है I इसका कारण शायद नारी कि शारीरिक और मानसिक दुर्बलता ही हो सकती है I

"प्राचीन काल से यों तो नारी पुरुष कि अर्धांगिनी मानी जाती रही है I युद्ध क्षेत्र में धार्मिक सामाजिक कार्यों में कोई भी कार्य नारी के बिना अपूर्ण होता था I मध्य काल में नारी शिक्षा से वंचित हो गयी, उसकी प्रगति के मार्ग अवरुद्ध हो गए I 'स्त्रिशूद्रोनाधीयताम' का विधान समाज में चल पड़ा"[२] किन्तु स्वातंत्रयोत्तर काल से पूर्व ही मुग़ल साम्राज्य की प्रतिस्थापना के बाद नारी पुरुष के हाथों का खिलौना मात्र ही बनी रही I वह भोग विलास और मनोरंजन का केंद्र बन गयी I बाल विवाह और पर्दा प्रथा ने नारी के व्यक्तिव को कुंठित कर दिया I आधुनिक काल तक पहुंचते पहुंचते स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद फिर से नारी विकास का क्षेत्र विस्तारित हुआ I पुरुष के सामान उनके अधिकार उसे मिले I उच्च पदों की प्राप्ति के लिए वह घर की चार दीवारी से निकलकर पुरुष के सामान पद पर आशीन होने की चेष्टा करने लगी I समाज के अनेक क्षेत्रों में वह प्रगतिशील होती रही I शिक्षा के प्रभाव से नारी स्वतंत्र होने लगी है, अपनी इच्छा से पति का चुनाव करने की जिद करने लगी है, वह जागरूक होने लगी है I[३] 'उखड़े हुए लोग' की जया शिक्षा द्वारा नारी का विकास हुआ है ये मानती है I " लाख बुरी और अनुपयुक्त होते हुए भी आज की शिक्षा स्त्री में राजनीति, इतिहास, विज्ञान और कला के प्रति समझ और आकर्षण उत्पन्न करती है I "किन्तु शरद सोचता है कि स्त्री घर कि रानी है I दोनों ही (स्त्री-पुरुष) यदि कार्य क्षेत्र में जुट जाएंगे तो घर को कौन देखेगा ? घर कि रानी जया ने मुँह बना के कहा - "इसका सीधा अर्थ तो यह हुआ ना, प्रमुख कार्य करने वाला पुरुष और स्त्री केवल गति बनाये रखने के लिए 'मोबिल आयल' I फर्क क्या रहा ? कल वह चरखे का तेल थी, आज मोटर का मोबिल आयल हो गयी I नाम बदल गया है, उपयोग वही रहा ."[३] सुशिक्षित जया पुरुष द्वारा पालित पोषित होकर परावलम्बी होने के बजाय आत्मनिर्भर होना पसंद करती है I

आज उच्च मध्यवर्गीय नारी को जितनी स्वतंत्रता है उतनी प्राचीन काल में नहीं थीI शिक्षा के प्रभाव से मध्यवर्गीय नारी अपनी मर्यादाओं को लेकर चलती है, पर कई बार शिक्षा के कारण ही वह स्वतंत्र का अर्थ नहीं समझती है परिणामतः उसके पथ भ्रष्ट होने कि पूरी संभावना रहती है I यह पथ भ्रष्टता कई बार चारित्रिक होती है तो कई बार पारम्परिक आदर्शो को मान्यता ना देने से I राजेंद्र यादव के उपन्यासों में नारी अपनी वैयक्तिकता को बनाये रखने के लिए पुरुष कि अनुगामिनी नहीं है अपितु अपनी पृथक अस्मिता कि मांग करती है I प्रभा को छोड़कर अन्य सभी प्रमुख नारी पात्र जया, पद्मा,माया देवी, रंजना,अमला, सुरजीत, मिसेज तेजपाल, निन्नी, आदि परम्परावादी अर्थो में पुरुष की हाँ में हाँ मिलाने वाली नारियो में से नहीं हैं I उनकी अपनी स्वतंत्र सत्ता है I पुरुष के चुनाव के सन्दर्भ में वह पुरुष को ही सहयोगी रूप बाद में पति के रूप में स्वीकार करती हैंI "देखिये की आलू कैसे छिलते हैं सारा खाना साथ बनाना पड़ेगा, समानता के

उपदेश तो बड़े जोर से दिए थे अब प्रैक्टिकल का वक्त आया है I" जया का यह कथन मध्यमवर्गीय नारी की अलग पहचान का द्योतक है I वह पुरुष की अधीनस्त होकर जीवन यापन करना नहीं चाहती है I सारे ही कार्य सामान रूप से पुरुष के साथ करना चाहती है I जया मानती है "विवाह की कहानी स्त्री की गुलामी की कहानी "I शरद भी नारी की स्वतंत्रता में विश्वास करता है, शायद इसीलिए मध्यकालीन नारी के दिमाग को कुंद करने के लिए ही पुरुष ने अपनी अधिकार लिप्सा का प्रदर्शन किया I पति की मृत्यु पर नारी को सती हो जाना पड़ाI स्त्री भी एक राजा की संपत्ति मानी जाती थी I किन्तु आज नारी प्रगतिशील है I उसे इच्छा और अर्थ दोनों की दृस्टि से स्वतंत्रता मिलनी चाहिए I शरद की मान्यता है कि आज "नारी पुरुष की आश्रिता ना हो I प्रेयसी पत्नी की अपेक्षा शायद इसीलिये अधिक प्रिय होती है क्यूंकि वह आर्थिक रूप से निर्भरता की स्थिति तक नहीं आ पाती I

राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज का आधार रूप नारी विषयक धारणाओं से निर्मित होता है, जबकि इस प्रकार की धारणा व्यक्त करना एकांगी या अधूरा है I यह भी संभव है कि वह बात पुरुष वर्ग के प्रति भी लागू हो I यदि हम सम्पूर्ण समाज को पुरुष वर्ग और नारी में विभाजक रेखाओं से विभक्त करेंगे तब वह मध्यवर्गीय समाज का आधार रूप नारी पक्ष का चित्रण करने से सम्बंधित होगा I राजेंद्र यादव के उपन्यासों में जो नारी पात्र आये हैं उन्ही के आधार पर हम इस मध्यवर्गीय समाज का रूप उभार पाते हैं, उदाहरण के लिए निम्न मध्यवर्ग के पात्र, उनके नारी पात्र कि यह मानसिकता है कि वह पढ़ी लिखी है और निर्दोष है तथा अकारण परिवारजनों द्वारा सतायी जा रही है I मध्यवर्गीय समाज के इस रूप को उभारती है कि मध्यवर्गीय नारी चाहे कितनी ही सुशिक्षित हो चाहे वह रूपवती हो किंतु उसे प्रताड़ित जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है और इस पर यदि पति द्वारा मौन ग्रहण लिया जाए तब तो उसकी मानसिकता को डूबते हुए अथाह सागर में तिनके सहारे का भी अभाव रहा है, ऐसा कहा जा सकता है कि इस प्रकार प्रभा कि मानसिकता उसकी चिंता, व्याग्रता, संत्रास, घुटन, पति द्वारा उपेक्षा, सास -ननद कि कटूक्तियों द्वारा उत्पन्न तिलमिलाहट, ससुर द्वारा घर से बाहर निकालने की बार बार धमकियां आदि द्वारा उपन्यासकार ने मध्यवर्गीय नारी की दुर्भाग्यपूर्ण नियति का एक सर्वांग चित्रण प्रस्तुस्त करने में सफलता प्राप्त की है. इस तरह प्रभा की मानसिकता के मध्यम से राजेंद्र यादव ने निम्न मध्यवर्गीय समाज की सुशिक्षिता नारियों की स्थिति को उजागर करने में अपनी औपन्यासिक कला का सफलतापूर्ण प्रदर्शन किया है I[४]

निष्कर्ष

राजेंद्र यादव ना केवल कहानीकार व उपन्यासकार हैं बल्कि उन्होंने नए कथा लेखकों की भी एक पीढ़ी को हंस का मंच देते हुए नए व उभरते हुए लेखकों को कथाकारों को, अनुवादक, समीक्षक व सम्पादक आदि का प्रकाशक आदि रूपों में होते हुए भी अपने अलग अंदाज को बयान किया है I इस कारण वे सदैव वाद-विवाद और संवाद के केंद्र में रहते हैं I साहित्य जगत में उनकी मध्यवर्गीय संवेदना एवं प्रगतिशील रुझानों की अपनी विशिष्ट पहचान है I उन्होंने अपनी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन की विभिन्न समस्याओं का साहित्य के द्वारा प्रस्तुत करते हुए अभिव्यक्ति के खतरों को उठाया है I राजेंद्र यादव के उपन्यासों की नायिकाएं एक विशिष्ट सीमा तक अन्याय व अत्याचार को सह लेती हैं लेकिन जब अस्तित्व और अस्मिता पर ही खतरा मडराने लगता है तब रौद्र रूप धारण व्यक्ति स्वतंत्र का आगाज करती हैं I

राजेंद्र यादव के विचार जीवन के निकट तथा यथार्थ से परिपूर्ण लगते हैं उनके वैचारिक स्वतंत्रता ने आम आदमी से लेकर ग्राम, नगरीकरण तक के जीवन को जीवंतता से तथा गहराई से प्रस्तुत किया है I राजेंद्र यादव के कथा साहित्य नारी को स्वतंत्र विचार करने वाली तथा जीवन में आये हर संघर्ष का सामना करने वाली, निर्भीक तथा सम्वेदनशीलता को दर्शाते है I उनके साहित्य रचनातंत्र का शिल्प पक्ष भी विवेचित करता रहा है जिसके लिए राजेंद्र यादव विवादास्पद भी रहे हैं I

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी काव्य में नारी - डॉ. वलभासा तिवारी, पृष्ठ - ४१
2. कल्याणश्री राजनाथ 'सुमन' वर्ष ३९ अंक १०
3. पृष्ठ- १२-६२
4. सारा आकाश- राजेंद्र यादव,
5. पृष्ठ - २३०
6. मंत्र विद्ध और कुलटा- राजेंद्र यादव,
7. पृष्ठ- ५९
8. एक इंच मुस्कान सहयोगी उपन्यास -
9. राजपाल खंड प्रकाशन १९९४
10. उखड़े हुए लोग - राधाकृष्णन प्रकाशन